International Journal of Trend in Scientific Research and Development, Volume 1(3), ISSN: 2456-6470
www.ijtsrd.com

पुराणों में आगत विज्ञानतत्त्व की समीक्षा

डॉ. मोहन मिश्र

युनिवर्सिटी प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, ति०माँ०भा० विश्वविद्यालय, भागलपुर

पुराणों में विज्ञान, वास्तुविद्या की अवस्थिति तो है ही, विभिन्न विद्याओं का भी समावेश है। ऐसी विद्याएँ आख्यानकों के सन्दर्भ में वर्णित हैं जिनपर आधुनिक कलियुगी मानव प्रायः विश्वास करना उचित नहीं समझता, किन्तु उस युग में वे विद्याएँ सच्ची थीं तथा उनका व्यवहार जनसाधारण के मध्य किया जाता था। संस्कृत में मन्त्र, शास्त्र, माया और विज्ञान तथा पालि में मन्त्र तथा विज्जा विद्या के ही पर्याय हैं। इन विचित्र विद्याओं में से कतिपय का आकलन यहाँ संक्षेप में उपस्थापित किया जा रहा है।

(1) अनुलेपन विद्या – इस विद्या का परिचय मार्कण्डेय पुराण में उपलब्ध होता है। इसके अन्तर्गत ऐसे विशिष्ट पादलेप का संकेत है जिसे पैर में लगाने से आधे दिन में ही सहस्र योजन की यात्रा करने की शक्ति आ जाती थी। इसका प्रयोगकर्त्ता एक ब्राह्मण था जिसने एक दूसरे ब्राह्मण को यह पादलेप प्रदान किया था। इस लेप के प्रभाव से वह ब्राह्मण हिमालय पहुँच गया, लेकिन सूर्य की किरणों से तप्त बर्फ पर पैर रखने से वह लेप धुल गया और वह शक्ति समाप्त हो गई।[1]

(2) स्वेच्छारूपधारिणी विद्या – इस विद्या का भी विवेचन मार्कण्डेय पुराण में उपलब्ध होता है। इस विद्या के द्वारा स्वेच्छया अभीष्ट रूप धारण किया जा सकता था। जब कन्धर ने अपने भाई कंक के वध का बदला चुकाने के लिए विद्युद् रूप राक्षस का वध किया, तब उसकी पत्नी मदनिका ने कन्धर के समक्ष आत्मसमर्पण किया। मदनिका इस विद्या में दक्ष थी। वह कन्धर के घर में आकर यक्षिणी बन गई।[2] इस विद्या के प्रभाव से महिषासुर ने सिंह, योद्धा, मतङ्ग तथा महिष का रूप धारण किया था।[3] पद्मपुराण में राजा धर्ममूर्ति की प्रशंसा के क्रम में कहा गया है कि वह यथेच्छरूपधारी था।[4]

(3) अस्त्रग्राम हृदय विद्या – इस विद्या के सहयोग से अस्त्रों का रहस्य जाना जाता था जिससे शत्रुओं की पराजय अनायास होती थी। मनोरमा नामक विद्याधारी को इस विद्या की जानकारी थी। उसने अपने आक्रमणकारी राक्षस से मुक्ति पाने के लिए राजा स्वारोचिष् को यह विद्या प्रदान की थी। यह विद्या रुद्र स्वायम्भुव मनु से वशिष्ठ को प्राप्त हुई। वशिष्ठ ने चित्रायुध को यह विद्या प्रदान की जो कि मनोरमा का मातामह था। चित्रायुध से मनोरमा के पिता इन्द्रीवराक्ष को इस विद्या की प्राप्ति हुई और इन्द्रीवराक्ष ने मनोरमा को यह विद्या दी।[5]

(4) सर्वभूतरुत विद्या – इस विद्या के प्रभाव से मनुष्य सभी प्रकार के अमानवीय जीव–जन्तुओं की ध्वनियों का अर्थ समझ लेता था। राजा ब्रह्मदत्त इस विद्या का ज्ञाता था।[6]

(5) पद्मिनी विद्या – इस विद्या का ऐसा प्रभाव था कि इसके द्वारा निधियों को वश में किया जाता था जिससे इस विद्या के जानकार को कभी भी सम्पत्ति की कमी नहीं होती थी।[7]

(6) रक्षोघ्न विद्या – यज्ञों को विध्वंस करने में राक्षस सर्वोपरि था। इस विद्या के सहारे राक्षसों को दूर भगाया जाता था। बलाक नामक राक्षस का हनन इस विद्या के द्वारा किया गया था।[8]

(7) जालन्धरी विद्या – यह विद्या अन्तर्धान से सम्बन्धित थी। आदिकवि वाल्मीकि ने कुशलव को इस विद्या की शिक्षा दी थी।[9]

(8) विद्यागोपाल मन्त्र – इस मन्त्र में इक्कीस अक्षर होते हैं। इस मन्त्र के प्रभाव से साधक को वाक्–सिद्धि प्राप्त होती थी। भगवान् शंकर ने काश्यपवंशीय पुण्यश्रव मुनि के पुत्र को यह मन्त्र दिया था।[10]

(9) परा बाला विद्या – यह सर्वसिद्धि प्रदायिनी विद्या थी। इसी विद्या के प्रभाव से अर्जुन को कृष्ण लीला का रहस्य समझ में आया था। इस विद्या का प्रथम उपदेश भगवती त्रिपुरा सुन्दरी द्वारा अर्जुन को दिया गया था।[11]

(10) पुरुष प्रमोहिनी विद्या – इस विद्या का प्रयोग कर स्त्रियाँ पुरुष को मोहित कर अपने वश में कर लेती हैं। यमराज की कन्या सुनीथा को रम्भा द्वारा इस विद्या का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था। इसी विद्या के सहारे वह प्रजापति अत्रि के पुत्र अंश की धर्मपत्नी तथा वेण की माता बनी।[12] वशीकरण विद्या का वर्णन अग्निपुराण में है।[13] इसके कई नुस्खे भी दिये गये हैं। भिन्न–भिन्न उद्भिद् द्रव्यों को एक साथ पीसकर तिलक करने का विधान है जिसके लगाने से मनुष्यों को कौन कहे, देवता भी वश में हो जाते हैं।

(11) उल्लापन विधान विद्या – इस विद्या द्वारा टेढ़ी वस्तु सीधी की जा सकती थी। कुब्जा को सरल, सीधी तथा स्वस्थ बनाने में श्रीकृष्ण ने इसी विद्या का प्रयोग किया था।[14]

(12) देवहूति विद्या – इस विद्या के प्रयोग से देवता भी उपस्थित हो जाते थे। यही विद्या कुन्ती को दुर्वासा ऋषि से

प्राप्त हुई थी जिसका प्रयोग करने पर भगवान् सूर्य सशरीर प्रकट हुए थे।[15]

(13) युवकरण विद्या – इस विद्या के प्रयोग से बूढ़ा भी नवयुवक बन जाता था। राजा शन्तनु को यह विद्या ज्ञात थी।[16]

(14) वज्रवाहनिका विद्या – युद्धभूमि में शत्रुओं को पराजित करने के लिए यह विद्या अचूक समझी जाती थी।[17]

इसी तरह की अन्य विद्याएँ जैसे – सिंह विद्या[18], नरसिंह विद्या[19], गान्धारी विद्या[20], मोहिनी तथा जृम्भणी विद्या[21], अन्तर्धान विद्या[22], वैष्णवी विद्या[23], त्रैलोक्यविजय विद्या[24] आदि अनेक चमत्कारिणी विद्याओं के संकेत पुराणों में उपलब्ध होते हैं।

इस तरह पुराणों के गम्भीर अनुशीलन से यदि इन विद्याओं के स्वरूप का परिचय मिल सके तो इस वैज्ञानिक युग में आज भी नवीन चमत्कार प्रदर्शित किया जा सकता है – इसमें रत्ती भर भी सन्देह की गुंजाइश नहीं।

पाद टिप्पणी –

[1] मार्कण्डेय पुराण 61/8&20

[2] मार्कण्डेय पुराण अध्याय 2

[3] मार्कण्डेय पुराण 83/20,
स्कन्द पुराण ब्रह्मखण्ड 7/15&27

[4] पद्मपुराण सृष्टिखण्ड 21/3

[5] मार्कण्डेय पुराण 63/24&27

[6] पद्मपुराण सृष्टिखण्ड 10/85

[7] मार्कण्डेय पुराण 64/14

[8] मार्कण्डेय पुराण 70/21

[9] पद्मपुराण पातालखण्ड 37/13

[10] वही 41/132

[11] वही 43/40

[12] वही भूमिखण्ड 34/38

[13] अग्निपुराण 123/26

[14] विष्णुपुराण 5/20/9

[15] भागवतपुराण 9/24/32

[16] वही 9/22/11

[17] लिंगपुराण अध्याय 51

[18] अग्निपुराण 43/13

[19] वही 63/13

[20] वही 124/12

[21] वही 323/4&20

[22] भागवतपुराण 4/15/15

[23] वही 6/8

[24] ब्रह्मवैवर्त पुराण गणेशखण्ड 30/1&3